शिक्षा के वैश्वीकरण का मानव मूल्यों पर प्रभाव

संयीता कुमारी

शोध छात्रा शिक्षा संकाय, साईनाथ विश्वविद्यालय, राँची झारखण्ड

परिचयः

आज के आधुनिक समय में जब शिक्षा का वैश्वीकरण हो रहा तो मानव मूल्यों पर उसके नाकारात्मक तथा सकारात्मक प्रभावों को नकारा नही जा सकता है। शिक्षा में वैश्वीकरण या हम यूँ कहें कि शिक्षा के आधुनिकीकरण ने हमारे समाज में मानव मूल्यों या नैतिक मूल्यो का संकट भी उत्पन्न कर दिया है। हमें सर्वव्यापीकरण करते समय हमेशा मानव मूल्यों को केन्द्र बिन्दु में रखकर सोचना होगा क्योकि मानव मूल्यों के सकारात्मक विकास के बिना शिक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

वैश्वीकरण शब्द की उत्पत्ति विश्व शब्द से हुई है। इसलिए वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया हैं जिसमें किसी समस्या घटना एवं विषय को क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय दायरे से निकालकर संपूर्ण विश्व के संदर्भ में देखा जाता है। भारत में वैश्वीकरण की अवधारणा उतना ही प्राचीन है, जितना मानव समाज का इतिहास''वसुधैव कुटुम्बकम''की अवधारणा वैश्वीकरण का ही पुरातन रूप है।

महात्मा गाँधी का एक कथन वैश्वीकरण की अवधारणा को व्यक्त करता है-''मैं अपने घर की दीवारे एवं खिड़किया बंद नही रखना चाहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि सभी देशों की संस्कृति मेरे घर में स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होती रहे जिससे भारत में नये -नये संस्कृतियों का प्रवाह होती रहे तथा भारत के संस्कृतियाँ भी अन्य देशों में अपनी छटा विखेरती रहे।'' रवीन्द्रनाथ टैगोर जी भी विश्वभारती की स्थापना इसी मूल विचार को आधार मानकर की थी

एन बी गोडके (N.B Godka) के शब्दों में '' वैश्वीकरण निम्न अर्थव्यवस्था में बढते हुए आर्थिक एकीकरण और राष्ट्रो के बीच बढ़ती आपसी निर्भरता की प्रक्रिया है। ''विभिन्न विद्धानों द्वारा दिये गये विचारों के आधार पर कहा जा सकता है कि सैद्धान्तिक रूप से वैश्वीकरण से तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें सभी राष्ट्र विभिन्न क्रियाकलापों में मिलजुल कर कार्य करते हैं। विभिन्न राष्ट्र संस्थाएँ एवं नागरिक विभिन्न राष्ट्रों का खुलकर सहयोग लेते है। इसे मानव जीवन के विभिन्न पक्षों में विश्वव्यापी सहयोग सक्रियता एवं समायोजन की प्रक्रिया कहा जा सकता है। इसमें निम्न बिन्दु समाहित है-

1. विश्व चेतना का विकास ।
2. किसी विषय को विश्वव्यापी बनाना।
3. विश्व अर्थव्यवस्था एवं राष्ट्रों के आपसी एकीकरण एवं उनकी परस्पर निर्भरता से संबंध ।
4. सम्पूर्ण विश्व को एक बाजार के रूप में समझना ।

वैश्वीकरण का शिक्षा पर प्रभावः

वैश्वीकरण के कई प्रभावित पहलू है, जैसे-

औद्योगिक ट्रांसपोट वैश्वीकरण, वित्तीय विश्व व्यापीकरण, राजनीतिक, वैश्वीकरण, सूचनात्मक वैश्वीकरण, परिस्थितिक या आपदा वैश्वीकरण इत्यादि विभिन्न पहलूओ के साथ-साथ वैश्वीकरण ने शिक्षा पर भी सकारात्मक एवं नाकारात्मक दोनों क्षेत्रों में प्रभाव डाला है। विश्व व्यापार संगठन के समझौते पर भारत द्वारा हस्ताक्षर करने पर शिक्षा भी व्यापार या आर्थिक महत्व का विषय बन गई है।

वैश्वीकरण का शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव :

वैश्वीकरण के कारण ही शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रोद्योगिकी के प्रयोग ने शिक्षा की परम्परागत प्रणाली में अत्यधिक परिवर्तन ला दिया है। आज शिक्षा में सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के सशक्त माध्यमों जैसे रेडियों, दूरदर्शन, टेपरिकार्डर, वीडियों-रिकार्डर, टेलीफोन, मोबाईल, कम्प्यूटर इण्टरनेट सीखने की प्रकिया में उपकरण के रूप में प्रयोग किये जा रहे हैं, रेडियो तथा दूरदर्शन पर विभिन्न विषयों के शैक्षिक कार्यक्रर्मो का प्रसारण किया जा रहा है, जिससे सुदूर क्षेत्रों में रह रहे लाखों विद्यार्थी घर पर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग में उच्च शिक्षा की विषयवस्तु,अध्यापन आवश्यकताओं तथा अध्यापकीय दृष्टिकोण सभी बदल गये हैं। इसलिए उच्च शिक्षा के पाठयक्रम में भी अत्यधिक परिवर्तन दृष्टिगत हो रहा है, उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण एवं बचाव, जनसंख्या शिक्षा, रोग मुक्ति व रोग नियन्त्रण के उपाय, सकारात्मक मूल्यों का विकास, कौशल विकास, मानवाधिकार शान्ति शिक्षा, कम्प्यूटर से लेकर अन्तरिक विज्ञान तक, समुद्र के गर्भ से लेकर वास्तुशास्त्र, खनिजशास्त्र तक इत्यादि नवीन विषयों का समावेश किया जा रहा है।

शिक्षा पर वैश्वीकरण का नाकारात्मक प्रभावः

एक तरफ जहॉ वैश्वीकरण के कारण अनेक विद्याथियों ने अपनी प्रतिभा एवं योग्यता को केवल भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में स्थापित किया है वही दूसरी ओर वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर दी है जिससे सर्वप्रथम मानव मूल्यों का ह्रास एवं दूसरा शिक्षा की गुणवत्ता में कभी आयी है। आज वैश्वीकरण के प्रभाव में शिक्षा और समाज दोनों क्षेत्र में बदलाव आ गया है। अंतराष्ट्रीय शिक्षक आयोग के अध्यक्ष जे डेलर्स के अनुसार, शिक्षा के चार स्तम्भ माने गए हैं:

1. ज्ञान के लिए शिक्षा :-
2. कार्य के लिए शिक्षा :-
3. अस्तित्व के लिए शिक्षा :-
4. स्व अस्तित्व के लिए शिक्षा ।

इन चारों स्तम्भों को पूर्ण करने के लिए शिक्षा

प्रणाली में सुधार की आवयकताः

वैश्वीकरण के फलस्वरूप देश में तीव्र आद्योगिक विकास हुआ है। आज लोग वेहत्तर जीवन की तलाश में शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। ऐसे में संयुक्त परिवार विखरकर एकल परिवारों में परिवर्तित हो गये हैं। जिसमें माता-पिता तथा बच्चे रह गये हैं। ऐसे परिवेश का सर्वाधिक प्रभाव बच्चों पर पड़ा। बच्चे जो मूलतः निष्कपट, सरल ह्रदय, सच्चे, ईमानदार व विश्वसनीय होते हैं। इस बदलते हुए महानगरीय तथा शहरी परिवेश में आकर तेजी से बदलने लगे है। बच्चे की प्रथम पाठशाला परिवार तथा प्रथम गुरु माता होती थी, बढती आवश्यकताओं के कारण पति-पत्नी दोनों को कमाने के लिए घर से बाहर निकलना पड़ा। इस एकल पारिवारिक व्यवस्था में बालक न केवल दादा-दादी, चाचा, ताऊ के प्यार से वंचित हो गया है बल्कि कुछ हद तक माँ-बाप के स्नेह से भी वंचित रहने लगा है। आज अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नही है। बच्चों के मन में उठने वाले प्रश्नों व जिज्ञासाओं का उत्तर देने वाला, भावनाओं को सहेजनेवाला कोई नही है, फलस्वरूप संयुक्त परिवार में मिलने वाले मानवीय मूल्यों, आदर्शो तथा संस्कारों से वे वंचित हो गये जिसके कारण वे माता-पिता तथा समाज के प्रति अपनी उत्तरदायित्व को भूल गये हैं जिससे माता-पिता को बुढापे में वृद्ध आश्रम का सहारा लेना पड़ता है। आधुनिक बालकों में बचपन, भोलापन, सहजता, सरलता, चंचलता, निश:छलता सहनशीलता तथा सहकारिता जैसे मानवीय भाव लुप्त होते जा रहे हैं तथा उनमें उग्रता अशान्ति,अवसाद, लालच, क्रोध आदि दिखाई देने लगा है। गम्भीर विद्यार्थी स्वयं को विरोधी व भ्रमों में खोया हुआ महसूस करते है।

2. शिक्षा की गुणवत्ता में कमीः- आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में डिग्रीयों का महत्व काफी हद तक बढ. गयी है जिसके परिणाम स्वरूप बहुत सारे बडे.-बड़े शिक्षण संस्थान डिग्रियाँ बाँटने का काम कर रहें है तथा लोग ज्यादा से ज्यादा पैसे देकर खरीदने का काम कर रहें हैं। इतना ही नही आये दिन स्थानीय परीक्षाओं में शिक्षक नकल कराते हैं। स्कूल प्रबन्धक ठेका लेते हैं और कोचिंग संस्थानों एवं बिना मान्यता के स्कुल एजेण्ट का काम करते हैं। अत: इन परिस्थितियों ने हर जगह पर ऑफिसर से लेकर चपरासी तक के कर्मचारियों के शैक्षिक कार्यो और मूल्यों में गिरावट उत्पन्न कर दिया है जो सबसे ज्यादा विद्यार्थियों को प्रभावित करता है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सबसे बड़ा ह्रास हुआ है। इसने माता-पिता से बालकों के सम्बन्ध को भी झकझोर दिया है क्योकि मानव का चरित्र पैसे से बेचने और खरीदने वाली एक वस्तु बनकर रह गयी है और मानव ऐश्वर्य का गुलाम बन गया है।

वर्तमान विश्व एवं भारत में मूल्यों का गंभीर संकटः

वर्तमान मूल्यों संकट के मुख्य तीन कारण है:-

1. आधुनिकीकरण (Modrnization)
2. पश्चिमीकरण (Westernization)

3. भौतिकवाद (Materalism)

आधुनिकी वैश्वीकरण तथा शिक्षा में वैश्वीकरण के कारण आज विश्वभर में सभी प्रकार के मानव मूल्यों का तेजी से पतन हो रहा है। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में रोजाना हम रोंगटे खड़े कर देने वाली घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं जिनको पढ़कर बेहद दुख और आश्चर्य होता है यह विश्वास ही नहीं होता कि क्या मानव जाती इतनी गिर गई है कि वह पशुओं से भी बदत्तर हो गई है। हम भारत की महान वैदिक संस्कृति के आदर्श मूल्यों व प्रतिमानों की दुहाई देते हुए थकते नहीं, लेकिन जब ऐसी सुनते है तो शर्म से सिर झुक जाता है कि अब भारत में मानव मूल्यों का संकट कितना व्यापक और गहरा हो गया है, जिस गति से मनुष्य जैसे जीवन्त प्राणी की मूल्यों में आस्था समाप्त हो रही है। ऐसा प्रतीत होता है मानों इक्कीसवी शताब्दी का भविष्य अन्धकारमय है। महानगरों की स्थिति विकराल रूप ग्रहण कर चुकी है। अधिकांश नर-नारी धनार्जन करने में व्यस्त है। अनेक लोग मलिन बसतियों में जीवन गुजारते है व गरीबी ने मूल्यों में उनकी आस्था घटा दी है। संस्थाएँ अपनी व्यवस्था कायम नहीं रख पा रही है। शिक्षा का संख्यात्मक विकास हो रहा है, लेकिन गुणात्मक नही। शिक्षा की व्यवस्था भी जर्जर होने लगी है। दहेज अस्पृश्यता नवबंधुओं को जलाने या मारने दवाओं की लत, करों की चोरी अवैध ढ़ंग से घन का संग्रह, देह व्यापार, कालाबाजारी, धार्मिक उन्माद व सामाजिक आर्थिक न्याय में कमी आदि ने हमारी इक्कीसवीं सदी की सुखद भविष्य की आशाओं पर पानी फेर दिया है। आज का मानव पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति का पोषक है। उसने व्यावसायिक मानव का स्वरूप ग्रहण कर लिया है तथा अब वह कर्तव्य प्रधान अवस्था भाव वाली भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि नहीं बनना चाह रहा है। सभी स्टेटस सिम्बल के चक्रव्युह में फँस गये दुरदर्शन व वीडीयो लगातार महाभारत के चक्रव्यूह में जयद्रथ की भूमिका का निर्वाह कर रहे है। भारतीयता अनैतिकता के माहौल में दम तोड़ रही है। भौतिकता की चकाचौध में लोग स्वंय को विदेशी जैसा दिखाने में गर्व महसूस करने लगे है। इन्द्रियसुख आधारित सम्पन्नतावादी दृष्टिकोण व स्व-केन्द्रित जीवन हमें अपेक्षाकृत अच्छा लगने लगा है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि अब न केवल बाहरी देशों में अपिंतु 21वीं सदी के भारत में भी घोर मूल्यहीनता फैल गई है। न केवल विद्यार्थी या युवा पीढ़ी मूल्यहीन तथा भ्रष्ट बने है बल्कि कई वृद्ध, शिक्षक, नेता व प्रायः सभी वर्गो व व्यवसायों के लोग मूल्यहीन बन रहे है।

अतः सभी को मूल्य शिक्षा दी जानी चाहिए विशेषकर नयी पीढ़ी को ताकि वे समझ सकें कि नैतिक मूल्यों कों बढ़ावा देकर एक सुसज्जित एवं उत्कृष्ट समाज की स्थापना की जा सकती है।

नैतिक मूल्यों को विकसित करने के उपायः

'मूल्य मानव में उचित व्यवहार के विचार होते है जो उन्हे श्रेष्ठता प्रदान करता है। मनुष्य के व्यक्ति और व्यवहार में पाँच मूलभूत मूल्य होने चाहिए-

1 सत्य (Truth)

2 प्रेम (Love)

3 शान्ति (Peace)

4 धर्म या सही कार्य (Religion or Right action)

5 अहिंसा (Non- Violence)

सत्यः- मानव बुद्धि का कार्य प्रत्येक वस्तु व्यक्ति में और स्वयं में वास्तविकता का स्वरूप होता है,

प्रेम :- यह मानव में शक्ति है जो प्रत्येक व्यक्ति दुसरों से पाता है और देता है यह सभी प्राणियों में एकता का भाव उत्पन्न करता है।

शान्ति :- यह सम्पूर्ण जीवन का प्रयास होता है, शान्ति से प्रसन्नता मिलती है, उत्साहवर्धन होता है और क्रियात्मकता विकसित होती है। जब तक व्यक्ति में शान्ति नही तब तक समूदाय और विश्व की शान्ति संभव नहीं हो सकती हैं ।

धर्म या कार्य :- जो व्यक्ति स्वयं का और दूसरो का हित समान भाव से रखकर कार्य करता है। वही सही प्रकार का व्यवहार करता है।

अहिंसा :-यह सार्वभौमिक या विश्वव्यापी प्रेम है यह इस विचार पर आधारित है कि मनुष्य का विश्व के सभी प्राणियों और वस्तुओं के प्रति कर्तव्य है। किसी को भी मन, वचन, और कर्म से हानि, हिंसा चोट नही पहुँचानी चाहिए।

जिस प्रकार से एक हाथ में पाँच ऊँगलियाँ होती है जो पूरे हाथ को कार्य करने की कुशलता प्रदान करता है, उसी प्रकार ये पाँचों मूलभूत मूल्य व्यक्ति के सही प्रकार से समाज में रहने व कुशलता पूर्वक कार्य करने तथा एक व्यवस्थित एवं सुदृढ़ तथा मुल्यवान समाज के निर्माण तथा विकास में सहायक है। इन मूलभूत मूल्यों को विकसित करने में सर्वप्रथम माता-पिता तथा परिवार दुसरा पास-पडोस तथा समाज तीसरा विद्यालय तथा शिक्षक प्रमुख एजेन्ट के रूप में कार्य करते हैं। इसलिए सर्वप्रथम माता-पिता तथा परिवार का यह उत्तरदायित्व है की अपने बच्चे को बचपन से ही लैगिंक भेद भाव से उठकर एक उदार विचार की ओर अग्रसर करना चाहिए। सदैव हमारे समाज मे लड़कियाँ या महिलाओं के लिए बहुत सारे बंधन है जैसे छोटा कपड़ा नहीं पहनना लड़को से बात नहीं करना अकेले कही बाहर नहीं जाना विवाह से संबंधित समाजिक बंधने ये सारी बंधनो का नियम सिर्फ महिलाओं को सिखाया जाता है। पुरुष पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते है जिसका परिणाम यह है की आज लड़के औरतो तथा लड़कियों को बहन, माँ से जैसा समझकर एक उपभोग की वस्तु समझने लगे है जो कभी भी मानव एवं समाज के हित में शुभ संकेत नही है।

पास-पड़ोस तथा समाज का प्रभाव भी बच्चों पर शहरी छाप बनाती है क्योकि मानव एक सामाजिक प्राणी होता है इसलिए आस-पडोस तथा समाज में लोगों को भाई चारे की भावना उत्पन्न करना चाहिए तथा माता-पिता तथा संगे संबंधियों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। बड़ो के प्रति आदर भाव पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। जात-पात तथा उँचा नीचा का विचार नहीं रखना चाहिए। लड़कें लड़कियों में विभेद नहीं करना चाहिए क्योकि प्रायः यह देखा जाता है। कि एक शिक्षित तथा सभ्य समाज के बच्चे चरित्रवान और सभ्य होते हैं।

विद्यालय समाज की कड़ी होती है, विद्यालय और शिक्षक का प्रभाव बालक पर बहुत गहरा रूप से पड़ता है इसलिए एक शिक्षक को कर्तव्य परायन तथा उदार विचार वाला होना चाहिए जिसे की विद्यालय का वातावरण अच्छा बना रहे। बालकों में मूल्य विकसित करने के लिए विद्यालय को शिक्षा के माध्यम से या बालक के क्रियाओं के माध्यम से बच्चों में अध्यात्मिक, धार्मिक,भौतिक, समानता, वैज्ञानिक, दृष्टिकोण, पर्यावरण संरक्षण, देश की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति, आदर, सौदर्यानुभूति, नम्रता, परोपकार, सहनशीलता, कर्तव्यपरायणता,धैर्य,अनुशासन,श्रमनिष्ठा व उच्च चारित्रिक,श्रेष्ठता आदि मानवीय गुण विकसित किये जाने चाहिए जिसमें भावी पीढ़ी को मानव मूल्यों से अवगत् करा सकें।

निष्कर्षः

मूल्यों के विकास में परिवार व समाज की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है। विद्यालय परिवार और समाज तीनों अभिकरणों को मूल्यों के विकास में रुचि लेनी चाहिए। मूल्यों के विकास के लिए अधिक अनुभव प्रदान करनें की व्यवस्था करनी चाहिए तथा मूल्य आधारित आचरण को स्वीकृत, पुरस्कृत तथा सभ्य बनाने के लिए अथक प्रयत्न करने चाहिए। निर्धनता के अभिशाप से भारतवासी को मुक्त करना है तथा मूल्यों में आस्था न रखने वालो से देश को बचाना है। परिवार व समाज मूल्यों के विकास में विद्यालयी प्रयासों के समर्थक प्रेरक व पूरक की भूमिका प्रभावशाली ढ़ंग से निभा सकतें हैं जिससे आने वाले पीढ़ी को हम एक प्रबुद्ध समाज की ओर अग्रसर कर सकते है। वैश्वीकरण ने समुचे राष्ट्र को एक धागों में पिरोने का काम किया है लेकिन हम जिस प्रबुद्ध भारत की कल्पना 21वीं शताब्दी में करने का प्रयत्न किया है। यह कल्पना सी प्रतीत होने लगी हैं। 21वीं शताब्दी में शिक्षा की नयी धारणा और प्रणाली में उदयीमान प्रवृत्तियों को फलने-फुलने के लिए अभी से बुनियाद रखनी होगी। इसके लिए ऐसी शिक्षा का आधार रखना होगा जो न सिर्फ आर्थिक उन्नति और विकास में सहायक होगी,बल्कि विश्व-शांति की स्थापना करने में भी सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्ध एवं डॉ0 शान्ति भूषणः 21 वीं शताब्दी के लिए शिक्षा
2. प्रो० सत्यपाल रूहेलाः मूल्य शिक्षा क्या,क्यों कैसे?
3. डॉ0 रामशकल पाण्डेय एवं डॉ० करूणा शंकर मिश्रः मानवाधिकार और मूल्य शिक्षण
4. डॉ0 पूनम मदानः समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
5. डॉ0 कमल प्रसाद बौद्धः समकालीन भारत की शिक्षा के विविध आयाम, बुद्ध मिशन प्रकाशन, पटना।